JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Title - Raashtreey Ekeekaran Aur Vishv-Shaanti Ke Lie Shiksha

डॉ० आनन्द किशोर
प्राचार्य मैक्स इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग
बिजूलिया, रामगढ़ झारखंड 829122

Abstract :- शिक्षा एक एक विकासशील प्रक्रिया है। इसी के माध्यम से सर्वांगीण विकास की यात्रा पूर्ण होती है। शिक्षा के बारे में नीतिशतक में भी कहा गया है- "विद्याविहीनः पशुः।" राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा इस प्रकार की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज में सामंजस्य स्थापित कर पाता है। शिक्षा गतिशील है। प्राचीनकाल से ही शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन देखा जा रहा है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकता है। राष्ट्रीय उन्नति में शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है। व्यक्तित्व निर्माण में भी इसकी महान भूमिका है।

Keyword – सर्वांगीण विकास, विद्याविहीनः, प्राचीनकाल, परंपरायें, मूलमंत्र, स्वामी विवेकानन्द जी, अन्तर्निहित, धर्मों, भाषाओं, जातियों, पुनर्शिक्षित, विश्वशांति, बेरोजगारी, शोषण, समृद्धि, भारत

INTRODUCTION

किसी भी देश की जानकारी उसकी प्रगति तथा संस्कृति के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। भारत एक प्रजातंत्रात्मक देश है। यहाँ की शिक्षा का मूल्य उद्देश्य योग्य एवं सभ्य नागरिक का निर्माण करना है। मानव समाज में परिवर्तन प्राचीन काल से ही देखा जा रहा है। पुरानी परंपरायें टूटती रहती हैं। परिवर्तन जीवन का मूलमंत्र है। किसी भी देश के भविष्य निर्माण एवं विकास के लिए शिक्षा व्यवस्था को गतिमान होना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है- "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

देश के विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों तथा देश-हित के लिए देश-प्रेम देशभक्ति की भावना शिक्षा के माध्यम से ही आ सकती है। शिक्षा के माध्यम से भ्रातृत्व एवं राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है।

विश्व में शांति स्थापित करने के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है। मानव की संपूर्ण प्रगति का आधार शिक्षा ही है। शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा तीनों को स्वाभावित सामंजस्य के निर्वाह से ही व्यक्ति और राष्ट्र सुखी हो सकते हैं। मानव के मस्तिष्क में यदि शांति की दीवारों का निर्माण किया जायेगा तभी विश्व-शांति की कल्पना की जा सकती है।

सहज ज्ञान और करूणा का विकास शिक्षा से ही संभव है। ये सभी गुण शान्ति एवं संतोष के आधार है। मन की शांति के द्वारा ही विश्व शान्ति की स्थापना संभव है। जब छात्रों में सह-अस्तित्व की भावना का विकास होगा; तभी शान्ति स्थापित की जा सकती है। विश्व शान्ति स्थापित करने के लिए शिक्षा से संधित जन-संचार साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे रेडियो, टेलीविजन, चलचित्र, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ।

यदि महिलाओं को ठीक ढंग से शिक्षित किया जाय तो निश्चित ही राष्ट्रीय एकीकरण मे बहुत बड़ी मदद मिलेगी। शिक्षा ग्रहण करने के लिए लड़कियों को भी जागरूक किया जाए। दिव्यांग बालक-बालिकाओं को भी यदि उनके आवश्यकता अनुसार शिक्षा दी जाए तो वे निश्चित ही समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकेगें।

शैक्षिक अवसरों में यदि समानता लायी जाए तो अवश्य ही विश्व-शांति की स्थापना की जा सकती है। शिक्षा सबके लिए जरूरी है। समाज में पुरुष तथा महिला को एक गाड़ी के दो पहियों के समान माना गया है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में महिलाओं को पूरूषों के समान अधिकार प्राप्त है।

शिक्षा जीवन की एक अमूल्य पूंजी है। इसके बिना मानव में पूर्णता नहीं आ सकती। सामाजिक मांगों को पूरा करके, रोजगार जगत के अपेक्षित कौशलों का विकास करके एवं उच्च स्तरीय नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देकर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। विवेक तथा सद्बुद्धि से ही मनुष्य अपने उपर मडराते हुए युद्ध. प्रदूषण तथा भूख आदि खतरों को दूर कर सकता है। इसके लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है।

शिक्षा को एक ऐसी प्रणाली की जरूरत है जो समय समय पर व्यक्ति को पुनर्शिक्षित कर सके। किसी भी देश की प्रगति और विकास के लिए उस देश के लोगों को उचित शिक्षा देना आवश्यक है शिक्षा की उचित व्यवस्था करने में धन की जरूरत होती है। जो देश शिक्षा पर जितना धन खर्च करता है: उसी के अनुरूप उसकी शिक्षा प्रणाली बनती है।

शिक्षा एक विकास है, समाज के विकास का एक प्रतिफल है। बिना शांति के जीवन का आधार नहीं है। विश्वबन्धुत्व की भावना विकसित करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। आर्थिक असमानता को समाप्त करने में भी शिक्षा योगदान देती है। आधुनिक समय में हर व्यक्ति और हर राष्ट्रीय समस्याओं से घिरा हुआ महसूस कर रहा है। शिक्षा के माध्यम से ही "वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विकसित की जा सकती है।

सम्पूर्ण विश्व में चारों ओर विभिन्न प्रकार की बुराइयां फैल रही हैं। इन बुराइयों को दूर करने में कुछ साधनों की आवश्यकता होती है इन साधनों में सबसे महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है।

भारत विभिन्नताओं का देश है। इसमें अनेक जाति, धर्म तथा भाषा से संबंधित लोग निवास करते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण में देश भक्ति का भाव नीहित होता है। हम बाह्य एवं आंतरिक संकटो का सफलतापूर्वक सामना तभी कर सकते है जब हम राष्ट्रीय एकीकरण की मजबूत जंजीरों में जकड़े हुए हों।

उपर्युक्त शिक्षा के अभाव में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को विकसित कर पाना मुश्किल है। शिक्षा को माध्यम बनाकर भारत के जन-जन में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना विकसित की जा सकती है। शिक्षा एक संजीवनी के समान है जो व्यक्ति के जीवन में खुशहाली लाकर सुखी जीवन जीने को प्रेरित करती है।

जब व्यक्ति शिक्षा रूपी जल से सिंचित हो जाएगा तो निश्चित ही व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन आ जायेगा। विश्व-शांति के लिए शिक्षा बहुत ही जरूरी है। यदि समाज में शिक्षित लोग रहेंगे तो निश्चित हो समाज का उन्नयन होगा। व्यक्ति उन्नति के चरम शिखर पर शिक्षा के माध्यम से हो पहुँच सकता है।

राष्ट्रीय एकीकरण की भावना तभी विकसित हो सकती है जब ठीक ढंग से शिक्षा की व्यवस्था की जाय। औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार से शिक्षा ग्रहण कर सकते है। जिस प्रकार जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार राष्ट्रीय एकीकरण के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है।

प्राचीन भारत में भी शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता था। शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत, ज्ञान-चक्षु और मानव का तीसरा नेत्र माना जाता था। उस युग के लोगों की यही सोच थी कि शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब संशयों का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा से प्राप्त अर्न्तदृष्टि व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति का

वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है, उसके सुख, सुयश एवं समृद्धि में योगदान देती है उसे जीवन के यथार्थ महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से चरित्र का निर्माण एवं व्यक्तित्व का विकास संभव है। शिक्षा एक सतत विकाशील प्रक्रिया है। यह मनुष्य के स्वाभाविक, सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास अवस्था की यात्रा का मार्ग निश्चित करती है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसी के माध्यम से मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। ज्ञान, कला और कौशल विकसित होती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के व्यवहार मे परिवर्तन आता है।

व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यवहार का दर्पण है। अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण के लिए शिक्षा आवश्यक है। सभी व्यक्तियों के लिए शिक्षा आवश्यक है। हर व्यक्तियों के विचार एवं सोच में अंतर देखने को मिलता है। ठीक ही कहा गया है "अहिंसापरमो धर्मः।" हर व्यकित के प्रयास से ही विश्व-शांति की स्थापना - की जा सकती है। "अकेले चना भाड़ नहीं कोड़ता।" किसी भी कार्य को पूर्ण करने में सहयोग की आवश्यकता होती है। यदि हम शिक्षा प्राप्त किये रहेंगे तो हमारी सोच भी अच्छी रहेगी।

बेरोजगारी, शोषण, व्यक्तित्व का दमन एवं आतंकवादी जैसी घटनाओं ने विश्व में अशांति फैला दी है। इसको समाप्त करने के लिए जागरूकता फैलाने एवं बालकों को बचपन से ही अनुशासित, चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का बढ़ावा देना होगा। बिना राष्ट्रों को एक धागे में जोड़े हुए विश्वशांति की बात करना उचित नहीं है। बालकों में शुरू से ही शांति के लिए प्रेम जागृति करना चाहिए जिससे वह विश्व को अपना समझकर सम्मान दे। इस प्रकार की भावना उत्पन्न करने के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है। मनुष्य अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है वह जो सोचता है वही बन जाता है। मनुष्य के विचार ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। मनुष्य के मस्तिष्क में आने वाले विचार ही उसकी सकारात्मक अथवा नकारात्मक सोच को व्यक्त करते है। जिस प्रकार यदि एक ग्लास में आधा पानी हो तो दो व्यक्तियों का अपना-अपना दृष्टिकोण हो सकता है। एक व्यक्ति के लिए ग्लास में आधा पानी भरा हो सकता है जबकि वही दूसरे व्यक्ति के लिए वह ग्लास आधा खाली हो सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकीकरण और विश्व-शांति के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से विश्वशांति स्थापित करने में बहुत मदद मिलेगी। ठीक ही कहा गया है -

"उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न च मनोरथैः।

नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।"

जन-साधारण को शान्ति-संदेश प्रदान करने के लिए ऐच्छिक संगठनों का भी प्रयोग किया जा सकता है। समाज के संघर्षों एवं तनावों को दूर करने के लिए अहिंसक साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा की बहुत ही आवश्यकता है।

निष्कर्ष : इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकीकरण और विश्व-शान्ति के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है। जिस प्रकार भूख को मिटाने के लिए भोजन का प्रयोग आवश्यक है; ठीक उसी प्रकार राष्ट्रीय एकीकरण और विश्व शान्ति के लिए शिक्षा का प्रयोग आवश्यक है। शिक्षा के अभाव में सुसभ्य समाज की कल्पना संभव नहीं है।